परिचायक है। अजन्ता गुफा में अंकित माता और शिशु ...
कलात्मकता एवं तत्युगीन जीवन की झलक मिलती है।

प्रश्न→ भारतीय इतिहास की भौगोलिक पृष्ठभूमि का वर्णन कीजिए
(GEOGRAPHICAL BACKGROUND OF INDIA)

उत्तर→ भारत की एक प्रमुख विशेषता यह है कि यहाँ की भूमि, पर्यावरण एवं प्राकृतिक सम्पदा मानव जीवन के लिए पूर्णतः अनुकूल है। प्रकृति ने मानव को भारत में हर वह साधन उपलब्ध कराया है, जिससे कि वह आर्थिक रूप से आत्म-निर्भर बन सके। भौगोलिक दृष्टि से भारत को अग्र चार भागों में बाँटा जा सकता है—

(1) **उत्तर का पर्वतीय प्रदेश**—इसमें पश्चिमी और पूर्वी चोटियाँ एवं ढलान हैं। इसी में वर्तमान कश्मीर, शिवालिक, कुमायूँ, टिहरी-गढ़वाल तथा सिक्किम सम्मिलित हैं।

(2) **गंगा तथा सिन्धु का उत्तरी मैदान**—इस भाग की सिंचाई सिन्ध और गंगा नदी द्वारा होती है। यह मैदान अपनी उपजाऊ भूमि और पैदावार के लिए जाना जाता है, जिसमें कि गंगा और यमुना द्वारा सिंचित प्रदेश भी सम्मिलित हैं।

(3) **मध्य भारत और दक्षिण का पठार**—इस प्रदेश के तहत उत्तर में नर्मदा एवं दक्षिण में कृष्णा और तुंगभद्रा के बीच का भू-भाग आता है। इस भाग में नर्मदा एवं ताप्ती नदियाँ पूर्व से पश्चिमी की ओर एवं अन्य नदियाँ पश्चिम से पूर्व की ओर बहती हैं।

(4) **सुदूर दक्षिण के मैदान**—इस भाग में दक्षिण के लम्बे एवं संकीर्ण समुद्री क्षेत्र आते हैं। इस भाग में गोदावरी, कृष्णा तथा कावेरी नदियों के उपजाऊ डेल्टा वाले प्रदेश आते हैं।

मानव एवं पर्यावरण (Man and Environment)

प्रकृति और जीवन की तरह ही मानव एवं पर्यावरण का सम्बन्ध प्रगढ़ और शाश्वत है, दोनों स्वतन्त्र रहते हुए अन्योन्याश्रित हैं। पर्यावरण दो शब्दों से मिलकर बना है—परि + आवरण। अतः हमारे चारों ओर प्रकृति तथा मानव निर्मित जो भी जीवित तथा निर्जीव वस्तुएँ हैं, वे सब मिलकर पर्यावरण बनाती हैं। पर्यावरण को हम अग्र तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं—

(1) **प्राकृतिक पर्यावरण**—इसके तहत हवा, पानी, भूमि, पर्वत, नदी, वृक्ष, वनस्पति और जीव-जन्तु आते हैं।

(2) **मानव निर्मित पर्यावरण**—इसके तहत गाँव, नगर, औद्योगिक एवं अन्य मानव निर्मित प्रतिष्ठान भवन, सड़कें, बाँध, नहरें, यातायात, उद्योग आदि आते हैं।

(3) **सामाजिक पर्यावरण**—इसके तहत आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व्यवस्थाएँ और उसका मानव पर प्रभाव आते हैं, जैसे, जनसंख्या वृद्धि, रोजगार, वाणिज्य आदि। इस प्रकार पर्यावरण जीवन के प्रत्येक पक्ष से जुड़ा हुआ है। अतः जिस प्रकार इतिहास का भूगोल से गहरा सम्बन्ध है, उसी प्रकार मानव इतिहास पर पर्यावरण के प्रभाव का अध्ययन करना अति आवश्यक है।